उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय 5

भविष्यवाणी का ऐतिहासिक विश्लेषण

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय.....1
आरंभिक राजतंत्र 1
मुख्य घटनाएं.....1
संयुक्त राज्य 2
विभाजित राज्य 2
भविष्यवाणिय सेवकाइयां.....2
वाचायी आदर्श.....2
विभाजित राज्य 3
असीरियाई तबाही 3
मुख्य घटनाएं.....3
सीरियाई-इस्राएली गठबंधन.....4
सामरिया का पतन 4
सन्हेरिब आक्रमण.....4
भविष्यवाणिय सेवकाईयां.....5
योना.....5
होशे 5
आमोस.....5
मीका 6
नहूम.....6
यशायाह 7
बेबीलोनी तबाही.....7
मुख्य घटनाएं.....8
पहला आक्रमण.....8
दूसरा आक्रमण.....8
तीसरा आक्रमण 8
भविष्यवाणिय सेवकाइयां.....9
यिर्मयाह.....9
सपन्याह.....9
योएल.....10
ओबद्याह 10
हबक्कूक 10

यहेजकेल......11
दानिय्येल......11
पुनर्वास का समय......12
मुख्य घटनाएं......12
इस्राएलियों का अपनी भूमि पर लौट आना......12
मंदिर का पुनर्निर्माण किया जाना......13
व्यापक धर्मपरित्याग......13
भविष्यवाणिय सेवकाइयां......13
हाग्गै......13
जकर्याह......14
मलाकी......14
उपसंहार......15

उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्याय पाँच

भविष्यवाणी का ऐतिहासिक विश्लेषण

परिचय

मेरा एक मित्र है जिसने हाल ही में मुझे एक कहानी सुनाई। उसके विवाह को कुछ ही वर्ष हुए थे और जब उसकी पत्नी उसके किसी दराज की सफाई कर रही थी तो उसे एक पत्र मिला जो उसके पति की पुरानी प्रेमिका का था। पहले तो वह काफी क्रोधित हो गई क्यांकि उसने सोचा कि यह पत्र कुछ ही समय पहले लिखा गया था, परन्तु मेरा मित्र उस लिफाफे और उस लिफाफे पर लिखी हुई तारीख के द्वारा यह प्रमाणित कर पाया कि यह पत्र वर्षों पहले लिखा गया था। मेरे मित्र ने मेरी ओर देखा और कहा, "रिच, मुझे नहीं पता कि मैं तुम्हें क्या बताऊं, क्योंकि मुझे नहीं पता कि क्या होता यदि मैं यह प्रमाणित नहीं कर पाता कि पत्र कब लिखा गया था।" दुर्भाग्यवश, बहुत बार मसीही पुराने नियम की भविष्यवाणी को गलत रूप में समझते हैं क्योंकि वे इस बात की परवाह नहीं करते कि भविष्यवक्ताओं ने कब अपनी बातों को कहा था या फिर भविष्यवक्ताओं ने अपनी पुस्तकें कब लिखी थीं। और यदि हमें जिम्मेदारी के साथ पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं का अध्ययन करना है तो हमें उस समय को समझने के लिए तैयार रहना होगा जिसमें उन्होंने सेवा की थी।

हमने इस अध्याय का शीर्षक दिया है, "भविष्यवाणी का ऐतिहासिक विश्लेषण" और हम इस बात को परखने जा रहे हैं कि किस प्रकार पुराने नियम का इतिहास हमें पुराने नियम की भविष्यवाणी को उचित रूप से समझने के लिए एक आवश्यक संदर्भ प्रदान करता है। हमारा ऐतिहासिक विश्लेषण भविष्यवाणिय इतिहास के चार मुख्य समयों में विभाजित होगा: पहला, आरंभिक राजतंत्र; दूसरा, असीरियाई तबाही, बेबीलोनी तबाही; और फिर अंत में हम पुनर्वास के समय को देखेंगे। आइए सबसे पहले हम आरंभिक राजतंत्र के समय को देखें।

आरंभिक राजतंत्र

पिछले अध्याय में हमने देखा था कि जब इस्राएल में राजतंत्र का उदय हुआ तो भविष्यवाणी का प्रचलन भी बढ़ गया। और इसलिए आरंभिक राजतंत्र, अर्थात् वे दिन जब इस्राएल में पहले राजा हुए थे, को देखने से हमें भविष्यवाणी के हमारे ऐतिहासिक विश्लेषण को आरंभ करने में सहायता मिलेगी। अब्राहम, जो लगभग 2000 ई.पू. में रहा था, के समय से शाऊल के दिनों तक इस्राएल में कोई मानवीय राजा नहीं था। परन्तु दाऊद का राज्य 1000 ई. पू. में स्थापित हुआ था, और उसका राज्य कई पीढियों तक बना रहा था। जब हम इस्राएल के इतिहास के इस समय का अवलोकन करते हैं तो हम दो मुख्य प्रश्न पूछेंगे: उस समय में कौनसी मुख्य घटनाएं घटी थीं और उन घटनाओं ने किस प्रकार भविष्यवाणिय सेवकाई को आकार दिया था?

मुख्य घटनाएं

आइए पहले उन दो मुख्य घटनाओं पर ध्यान दें जो आरंभिक राजतंत्र में घटी थीं। पहले हम संगठित या संयुक्त राज्य के बारे में बात कर सकते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

संयुक्त राज्य

लगभग 1000 ई.पू. में दाऊद यरूशलेम के सिंहासन पर बैठा। उसने सारे गोत्रों को एकत्र किया, राज्य के चारों ओर सुरक्षित सीमाओं की स्थापना की, और इस तैयारी में परमेश्वर का संदूक यरूशलेम में लेकर आया कि उसका पुत्र परमेश्वर के मंदिर का निर्माण करे। दाऊद के पुत्र सुलेमान ने अपने पिता के उदाहरण का अनुसरण किया। उसने इस्राएल की सीमाओं को बढ़ाया और गोत्रों को संगठित रखा। और सुलेमान ने एक वैभवशाली मंदिर बनाया और उसे यहोवा की आराधना के लिए समर्पित किया। शमूएल, राजाओं, और इतिहास की पुस्तकें इस बात को स्पष्ट कर देती हैं कि दाऊद और सुलेमान सिद्ध राजा नहीं थे। पर फिर भी बाइबल इस समय को एक ऐसे आदर्श समय के रूप में दर्शाती हैं जब परमेश्वर के लोगों ने अनेक आशीषें प्राप्त की थीं।

विभाजित राज्य

इन प्रारंभिक दिनों में जब अच्छी परिस्थितियां थीं, तो हमें एक और मुख्य घटना को स्मरण रखना है, अर्थात् विभाजित राज्य। दुर्भाग्यवश, सुलेमान और उसके पुत्र रहूबियाम ने उत्तरी गोत्रों के साथ उस आदर के साथ व्यवहार नहीं किया जिसके वे योग्य थे, इसलिए उत्तर के सारे गोत्र अलग हो गए और लगभग 930 ई.पू. में अपना अलग राष्ट्र बना लिया। हम इस घटना को 1राजाओं 12 और 2इतिहास 11 में देखते हैं। जब रहूबियाम ने उत्तर के गोत्रों से न्यायपूर्ण व्यवहार करने से इनकार कर दिया तो उन्होंने अलग होकर अपना राष्ट्र बना लिया। यारोबाम प्रथम उत्तरी गोत्रों का राजा बन गया और दान एवं बेथेल में आराधना के केन्द्रों के साथ-साथ सामरिया में राजधानी स्थापित कर ली। अब यारोबाम दक्षिण के विरूद्ध अपने विद्रोह में बहुत आगे बढ़ गया। उसने दान और बेथेल के अपने आराधना केन्द्रों में मूर्तियों को स्थापित कर दिया, और ऐसा करने के द्वारा उत्तरी राज्य बहुत अधिक भ्रष्ट हो गया। वह राष्ट्र यहोवा के प्रति अपनी वफादारी से मुड़ गया और अपनी वाचायी जिम्मेवारियों के प्रति समर्पण करने से इनकार कर दिया। अब इस समय के दौरान यहूदा के भी अपने उतार चढ़ाव रहे, परन्तु अधिकांश वे उत्तरी इस्राएल से अधिक विश्वासयोग्य रहे।

अतः हमने आरंभिक राजतंत्र में दो मुख्य घटनाओं को देखा है:पहला, दाऊद और सुलेमान के अधीन संयुक्त राज्य जब लोगों ने जबरदस्त आशीषें प्राप्त कीं, और फिर रहूबियाम के दिनों में राज्य का विभाजन।

अब जब हमने उन दो घटनाओं को देख लिया है जो कि आरंभिक राजतंत्र में घटी थीं, तो हमें यह पूछना है कि इन घटनाओं ने भविष्यवक्ताओं की सेवकाइयों को किस प्रकार आकार प्रदान किया।

भविष्यवाणिय सेवकाइयां

सोलह अलग-अलग भविष्यवक्ता हैं जिनकी सेवाओं को पुराने नियम की बड़ी और छोटी भविष्यवाणिय पुस्तकों में सारगर्भित किया गया है। शमूएल, राजाओं, और इतिहास की पुस्तकें यह स्पष्ट करती हैं कि आरंभिक राजतंत्र का समय भविष्यवाणिय क्रियाओं से भरा हुआ था, परन्तु भविष्यवाणियों की इन पुस्तकों में से कोई भी पुस्तक उस समय से संबंधित नहीं है। हम आरंभिक राजतंत्र के विषय में यही कह सकते हैं कि वह हमें उन भविष्यवक्ताओं की पृष्ठभूमि प्रदान करता है जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं। अब हम कम से कम दो रूपों में इस पृष्ठभूमि को देख सकते हैं।

वाचायी आदर्श

एक ओर बाद में लिखने वाले भविष्यवक्ताओं ने संयुक्त राजतंत्र को महत्वपूर्ण राजकीय वाचायी आदर्श स्थापित करने वाले के रूप में देखा। उन्होंने परमेश्वर के लोगों के लिए अपनी सारी आशाओं को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उस वाचा पर रखा जो परमेश्वर ने दाऊद के साथ बांधी और सुलेमान के साथ जिसकी पुष्टि की। उन्होंने उस दिन की चाहत की जब इस्राएल दाऊद और सुलेमान के दिनों के समान यहूदा के साथ पुनः मिल जाएगा। उन्होंने उस दिन की बाट जोही जब दाऊद का सिंहासन फिर से सुरक्षित हो जाएगा और राष्ट्र की सीमाओं का एक बार फिर से विस्तार होगा। अतः इस भाव में संयुक्त राजतंत्र हमें पुराने नियम के लिखने वाले भविष्यवक्ताओं की पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

विभाजित राज्य

दूसरी ओर, राज्यों के विभाजन ने इस बात की पृष्ठभूमि भी प्रदान की कि लिखने वाले भविष्यवक्ता दो भिन्न राष्ट्रों की सेवा करते थे। इन राष्ट्रों के इतिहास अलग-अलग थे। कुछ भविष्यवक्ता उत्तरी राज्य में यहोवा की सेवा करते थे और वाचायी दण्ड की चेतावनी देते थे एवं लोगों को महान् चंगाई एवं आशीष के एक दिन के प्रति आश्वस्त करते थे। उनका मुख्य ध्यान सामरिया पर था, जो उत्तरी गोत्रों की राजधानी था। अन्य भविष्यवक्ताओं ने यहूदा में यहोवा की सेवा की और उन्होंने दण्ड के प्रति चेतावनी दी एवं दक्षिण में रहने वाले लोगों को आशीषें प्रदान कीं, परन्तु उन्होंने यरूशलेम और यहूदा के गोत्र पर ध्यान दिया।

यद्यपि लिखने वाले कोई भी भविष्यवक्ता राजतंत्र के आरंभिक समय से नहीं आए थे, परन्तु हम पाते हैं कि इस समय ने सारे भविष्यवकताओं की सेवकाइयों की मूल पृष्ठभूमि की रचना की। आरंभिक राजतंत्र के समय ने वाचा के आदर्शों को स्थापित किया और इसने उत्तरी और दक्षिणी राज्य की वास्तविकता को स्थापित किया।

अब तक हमने आरंभिक राजतंत्र की पृष्ठभूमि को देखा है। अब हमें भविष्यवाणिय इतिहास के दूसरे मुख्य समय, असीरियाई दण्ड के समय, की ओर मुड़ना चाहिए।

असीरियाई तबाही

जैसा कि हमने पहले के अध्यायों में देखा है, वाचा के लोगों की यह जिम्मेदारी थी कि वे प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य और वफादार रहें, और जब उन्होंने जघन्यता के साथ इस वाचा का उल्लंघन किया तो उन्होंने स्वयं को ऐसी परिस्थिति में पाया जहां परमेश्वर युद्ध के रूप में उन पर दण्ड भेजे। 734 से 701 ई.पू. में असीरियाई साम्राज्य के माध्यम से युद्ध में हार का दैव्य दण्ड परमेश्वर के लोगों पर आया। आठवीं और सातवीं सदी के दौरान असीरियाई साम्राज्य अपनी शक्ति में और अधिक बढ़ गया और उसने अनेक अन्य राष्ट्रों पर भी विजय पा ली। अपनी शक्ति की पूरी चरम सीमा पर पहं ुचने पर असीरिया का साम्राज्य वर्तमान तुर्की से पारसी खाड़ी से होता हुआ मिस्र के दक्षिण तक पहुंच गया। इस्राएल और यहूदा इस बड़े और आक्रामक साम्राज्य का सामना करने से बच नहीं पाए। असीरियाई दण्ड के इस समय को जांचने के लिए हम फिर से दो विषयों को देखेंगे: वे मुख्य घटनाएं कौनसी थीं जो उस समय में घटी थीं, और किस प्रकार इन घटनाओं ने उन सदियों के दौरान सेवकाइयों को प्रभावित किया था?

मुख्य घटनाएं

असीरियाई प्रभाव वाली सदियों में ऐसी कौनसी घटनाएं थीं जिन्होंने पुराने नियम के भविष्यवाणीय लेखनों को प्रभावित किया था? कम से कम तीन ऐसी घटनाएं थीं जो हमारे अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है: पहला, सीरियाई-इस्राएली गठबंधन; दूसरा, सामरिया का पतन; और तीसरा, सन्हेरिब आक्रमण।

सीरियाई-इस्राएली गठबंधन

सीरियाई-इस्राएली गठबंधन में उस समय असीरियाई प्रभाव के अधीन तीन छोटे देशों के बीच संघर्ष चल रहा था: सीरिया, उत्तरी इस्राएल और यहूदा। हम इन घटनाओं के बारे में पुराने नियम में कई जगहों पर पढ़ सकते हैं, परन्तु एक बहुत ही रूचिकर अनुच्छेद यशायाह 7 है। 734 के आसपास सीरिया और उत्तरी इस्राएल असीरियाई साम्राज्य को कर देते-देते थक गए थे, इसलिए उन्होंने यह गठबंधन करने का निश्चय किया ताकि वे असीरिया को रोक सकें क्योंकि असीरियाई अपने साम्राज्य के दूसरे भागों में समस्या का अनुभव कर रहे थे। अपना गठबंधन बनाने के अतिरिक्त इस्राएल और सीरिया ने यहूदा को भी मजबूर किया कि वह उनके साथ मिल जाए। परन्तु यहूदा के राजा अहाज ने उनके साथ हाथ मिलाने से इनकार कर दिया और असीरिया से सहायता की अपील की। इन घटनाओं के परमेश्वर के लोगों के लिए अनेक परिणाम हुए, परन्तु हमें उनमें से कम से कम एक बड़े परिणाम के बारे में जानना चाहिए। उत्तर और दक्षिण दोनों असीरिया के साथ मतभेद के पथ पर थे। उत्तरी इस्राएल ने असीरिया के विरुद्ध विद्रोह किया इसलिए असीरिया के राजा आए, हमला किया और उत्तरी इस्राएल को तबाह कर दिया। यहूदा ने कुछ समय तक असीरीया का साथ दिया और इसलिए उस पर असीरिया का बहुत अधिक कर्ज और कर चढ़ गया। परन्तु अन्त में यहूदा ने भी असीरिया के विरूद्ध विद्रोह किया जिससे दक्षिणी यहूदा पर भी आक्रमण होने ही वाला था।

सामरिया का पतन

तबाही के असीरियाई समय की दूसरी बड़ी घटना सामरिया का पतन था। सामरिया उत्तरी इस्राएल की राजधानी था और वह सीरियाई-इस्राएली गठबंधन के विद्रोह के कारण असीरियाई प्रतिशोध का पात्र बन गया था। हम इस घटना के बारे में 2राजाओं 17 में पढ़ते हैं। असीरिया की बड़ी सेना उत्तरी इस्राएल के विरुद्ध बढ़ी और सामरिया को तबाह कर दिया, और असीरिया ने अनेक उत्तरी इस्राएलियों को बंधुआई में भेज दिया। अब इस घटना ने परमेश्वर के लोगों के लिए एक नए दिन का उदय किया, परन्तु एक बड़ी बंधुआई के वाचायी दण्ड की पराकाष्ठा पहली बार तब हुई जब उत्तरी इस्राएल का असीरिया के लोगों के हाथों विनाश हुआ।

सन्हेरिब आक्रमण

असीरियाई तबाही की तीसरी बड़ी घटना यहूदा के विरूद्ध सन्हेरिब का आक्रमण था। यहूदा कुछ समय तक असीरिया के क्रोध से बचा रहा क्योंकि उन्होंने अपने आप को असीरिया के प्रति समर्पित कर दिया ताकि उन्हें उत्तरी राज्य से सुरक्षा मिल सके। परन्तु बाद में यहूदा ने भी असीरिया के विरुद्ध विद्रोह कर दिया जिससे उन्हें इस बड़े साम्राज्य के क्रोध का सामना करना पड़ा। यहूदा के विरुद्ध कई आक्रमण हुए, परन्तु सबसे घातक आक्रमण 701 ई.पू. के आसपास हुआ, जो कि सन्हेरिब का आक्रमण था। हम इस घटना के बारे में 2राजाओं 18 और 19 में पढ़ सकते हैं। असीरिया के लोगों ने कई यहूदी शहरों को नाश कर दिया और यरूशलेम तक पहुंच गए। वास्तव में ऐसा लगा कि सब कुछ समाप्त हो गया, तब यहूदा का राजा हिजकिय्याह यहोवा की ओर मुड़ा और चमत्कारिक रूप से बचा लिया गया। अब यहूदा असीरिया का वासल राज्य बन गया, परन्तु वह हिजकिय्याह के दिनों और सन्हेरिब आक्रमण के दौरान पूरी तरह से नाश होने से बच गया।

अतः हम देख सकते हैं कि असीरियाई तबाही के दौरान तीन मुख्य घटनाएं थीं: 734 में सीरियाई-इस्राएली गठबंधन; दूसरा, 722 ई.पू. में सामरिया का नाश; और अंत में 701 का सन्हेरिब आक्रमण।

अब जब हम असीरियाई तबाही के दौरान हुई कई बड़ी घटनाओं को देख चुके हैं, तो हमें जांचना है कि इन तीनों घटनाओं ने भविष्यवक्ताओं की सेवकाइयों को किस प्रकार प्रभावित किया।

भविष्यवाणिय सेवकाईयां

असीरियाई तबाही का भविष्यवक्ताओं की सेवकाई पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। पुराने नियम में पाई जाने वाली 16 पुस्तकों में से 6 इस समय के दौरान यहोवा के दूतों की सेवकाइयों के बारे में बताती हैं- वे हैं योना, होशे, आमोस, मीका, नहूम और यशायाह। इन सब भविष्यवक्ताओं ने असीरियाई तबाही के दौरान सेवकाई की। आइए संक्षिप्त रूप से देखें कि ये भविष्यवक्ता असीरियाई तबाही के बारे में क्या कहते हैं?

योना

सबसे पहले हमें योना का उल्लेख करना चाहिए। 2 राजाओं 14:25 के अनुसार परमेश्वर ने योना को यारोबाम 2 के शासन में भविष्यवाणी करने के लिए बुलाया जो लगभग 793-753 ई.पू. तक उत्तरी इस्राएल का राजा था। और योना की सेवकाई का स्थान भी अन्य भविष्यवक्ताओं की अपेक्षा अलग सा था क्योंकि परमेश्वर ने उसे असीरिया की राजधानी निनवे जाने के लिए कहा था। वह असीरिया की इस राजधानी में गया और यहोवा के वचन का प्रचार किया, और उसका मुख्य संदेश साधारण सा था, जैसा कि हम योना 3:4 में पढ़ते हैं :

> अब से चालीस दिन के बीतने पर नीनवे उलट दिया जाएगा। (योना 3:4)

योना की अपेक्षा के प्रतिकूल, निनवे शहर के लोगों ने पश्चाताप किया जब उन्होंने यहोवा की ओर से इस वचन को सुना, और फिर परमेश्वर ने जिस विनाश की चेतावनी दी थी, उसे उन पर नहीं डाला। योना की सेवकाई यहोवा की उस दया को दर्शाती है जो असीरियाई साम्राज्य जैसे दुष्ट राज्य पर भी हो सकती है।

होशे

असीरियाई तबाही के दौरान सेवकाई करने वाला एक अन्य भविष्यवक्ता होशे भी था। होशे 1:1 हमें बताता है कि होशे ने यहूदा के राजाओं उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह के दिनों में सेवा की। उज्जियाह के शासन का अंतिम वर्ष 740 ई.पू. के आसपास था और हिजकिय्याह के शासन का पहला वर्ष 716 ई.पू. के आसपास था। इससे ज्ञात होता है कि होशे भविष्यवक्ता की सेवकाई का समय काफी लम्बा था। उन्होंने मुख्य रूप से 750 ई.पू. के आसपास से 722 ई.पू. में सामरिया के पतन के समय तक उत्तरी इस्राएल में सेवा की थी। तब होशे शायद दक्षिण की ओर चला गया था। अतः हम देख सकते हैं कि होशे ने सीरियाई-इस्राएली गठबंधन से पूर्व खुशहाली के दिनों में सेवा की थी, और उसने सामरिया के पतन के समय में भी भविष्यवाणी की थी।

होशे की भविष्यवाणियों का केन्द्र भाग दर्शाता है उसने उत्तरी इस्राएल में सेवा की थी। उसकी अधिकांश भविष्यवाणियां उत्तर में भ्रष्टाचार और बुराई के प्रति चेतावनी से भरी हुई हैं। होशे का मुख्य संदेश यह था- उत्तरी राज्य पाप के द्वारा इतना भ्रष्ट हो गया था कि परमेश्वर इस्राएल और सामरिया का विनाश करने के लिए असीरिया को लाकर उन्हें दण्ड देने वाला था। निसंदेह यह भविष्यवाणी सामरिया के पतन के साथ पूरी हो गई थी। फिर भी होशे ने आशा प्रदान की थी। उसने कहा था कि एक दिन पुनर्वास की वाचायी आशीषें आएंगी, चाहे यह बंधुआई के बाद ही क्यों न हो।

आमोस

असीरियाई तबाही पर ध्यान केन्द्रित करने वाला तीसरा भविष्यवक्ता आमोस था। आमोस 1:1 बताता है कि आमोस ने तब सेवकाई की जब उज्जियाह यहूदा का राजा था और यारोबाम इस्राएल का राजा था। यह पद हमें आमोस की सेवकाई के समय का अनुमान बताता है जो 760 से 750 ई.पू. के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

लगभग था। आमोस ने 734 के सीरियाई-इस्राएली गठबंधन से पहले सेवकाई की थी। उसने यारोबाम 2 के अधीन उत्तरी इस्राएल की खुशहाली और उदासीनता के समय में सेवा की थी। और होशे के समान आमोस ने उत्तरी इस्राएल में सेवा की और उसका मुख्य संदेश यह था- उसने अपने समय के लोगों को चेतावनी दी थी कि असीरिया की ओर तबाही आ रही है और सामरिया का पतन हो जाएगा और बंधुआई में ले जाया जाएगा। जैसा कि आमोस 5:27 में आमोस इस्राएलियों से कहता है:

> इस कारण मैं तुम को दमिश्क के उस पार बंधुआई में कर दूंगा, सेनाओं के परमेश्वर यहोवा का यही वचन है। (आमोस 5:27)

अपनी पुस्तक के अंतिम अध्याय में आमोस उस आशा को पुनः बताता है कि बंधुआई इस्राएल का अंत नहीं होगा। इसके बाद पुनर्वास होगा, अर्थात् बंधुआई के बाद पुनर्वास की वाचायी आशीष जिसकी प्रतिज्ञा मूसा ने की थी, उसकी भी आमोस ने फिर से पुष्टि की।

मीका

असीरियाई तबाही के विषय बात करने वाला चैथा भविष्यवक्ता मीका था। मीका 1:1 कहता है कि उसने यहूदा के राजाओं योताम, आहाज और हिजकिय्याह के दिनों में सामरिया और यरूशलेम के विषय में सेवकाई की। मीका ने कम से कम 735 ई.पू., जो योताम के शासन का अंतिम वर्ष था, से 701 ई.पू. में सन्हेरिब आक्रमण के दिनों तक परमेश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में सेवा की। होशे और आमोस के असमान मीका ने यहूदा में सेवा की, विशेषकर यरूशलेम के क्षेत्र में। सामान्य रूप में कहें तो मीका का संदेश यह था कि परमेश्वर असीरिया के लोगों के हाथों सामरिया और यरूशलेम दोनों को दण्ड देने जा रहा है। उसे थोड़ी सी आशा थी कि सामरिया विनाश से बच जाएगा, और उसने यह चेतावनी भी दी कि यरूशलेम का विनाश होने वाला है। सन्हेरिब के आक्रमण के दौरान मीका ने झूठे भविष्यवक्ताओं का विरोध किया जिन्होंने कहा था कि यरूशलेम का किसी भी शत्रु के द्वारा विनाश नहीं किया जा सकता। उसने तर्क दिया कि यदि पश्चाताप नहीं किया जाता है तो यरूशलेम का भी विनाश होगा। परन्तु फिर भी मीका ने इस्राएल और यहूदा को यह आशा दी कि यदि बंधुआई होती भी है तो भी एक दिन परमेश्वर उसके शत्रुओं से बदला लेगा और वह असीरिया के बंधन से अपने लोगों को छुड़ा लेगा और लोगों को पुनः एकत्रित करने एवं उस भूमि पर उनकी वाचायी आशीषों को पुनरुस्थापित करने के लिए एक महान् राजा को लाएगा।

नहूम

असीरियाई तबाही के समय के दौरान सेवा करने वाला पांचवां भविष्यवक्ता नहूम था। नहूम की सेवकाई का समय उसकी पुस्तक में स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है, परन्तु उसकी पुस्तक में पाई जाने वाली सामग्री से इसका अनुमान लगाया जा सकता है। उसकी सेवकाई का समय 663 ई.पू. से 612 ई.पू. के बीच का था। उसकी पुस्तक के दो पद इस संभावित समय के बारे में बताते हैं। 3:8 में हम पाते हैं कि थेबेस नामक मिस्री नगर पर असीरिया ने विजय पा ली थी और यह घटना 663 ई.पू. में हुई थी। परन्तु भविष्यवक्ता असीरिया की राजधानी निनवे के विनाश की भविष्यवाणी करता है, और वह इसे 3:7 में भविष्य की घटना के रूप में बताता है। निनवे का विनाश 612 ई.पू. में हुआ था, अतः हम समझ सकते हैं कि उसकी सेवकाई उस बड़ी घटना से पहले हो चुकी थी।

हम 1:15 में पढ़ते हैं कि नहूम ने यहूदा को संबोधित किया, अतः हम इस बात से आश्वस्त हो सकते हैं कि उसने यहूदा में सेवा की थी, परन्तु नहूम अपना मुख्य ध्यान यहूदा पर नहीं बल्कि असीरिया पर लगाता है। इस समय तक इस्राएल और यहूदा दोनों ने असीरिया के हाथों काफी कष्टों को सहा था, और इन कष्टों के बीच नहूम के पास एक मुख्य संदेश था: परमेश्वर असीरिया को नाश करने जा रहा है।

वह यहूदा को आश्वस्त करता है कि राजधानी निनवे को नाश करने के द्वारा परमेश्वर असीरिया को दण्डित करेगा। जैसा कि हम 3:5 में पढ़ते हैं, यहोवा इन शब्दों को कहता है:

> सेनाओं के यहोवा की यह वाणी है, मैं तेरे विरूद्ध हँू, . . . मैं तुझे तुच्छ कर दूंगा, और सब से तेरी हंसी कराऊंगा। और जितने तुझे देखेंगे, सब तेरे पास से भागकर कहेंगे, नीनवे नाश हो गई। (नहूम 3:5-7)

यशायाह

असीरियाई तबाही पर ध्यान केन्द्रित करने वाला छठा भविष्यवक्ता यशायाह था। यशायाह 1:1 उल्लेख करता है कि यशायाह ने यहूदा के राजाओं उज्जियाह, योताम, आहाज और हिजकिय्याह के राज्यों में सेवकाई की थी। राजाओं का उल्लेख हमें बताता है कि यशायाह ने लगभग 740 ई.पू. से 701 ई.पू. के कुछ समय बाद सन्हेरिब आक्रमण तक के समय में सेवा की थी। हम देख सकते हैं कि यशायाह ने सीरियाई-इस्राएली गठबंधन, सामरिया के पतन और सन्हेरिब आक्रमण के समय के दौरान सेवकाई की थी। यशायाह की पुस्तक के लेख दर्शाते हैं कि उसने यहूदा में सेवा की, विशेषकर यरूशलेम में। असीरियाई तबाही के समय में यशायाह ने कई रूपों में यहूदा में कार्य किया। उसने सीरियाई-इस्राएली गठबंधन के दौरान सच्चाई और यहोवा के प्रति विश्वास के लिए आमंत्रित किया। सन्हेरिब आक्रमण के दौरान यशायाह ने राजा हिजकिय्याह को यरूशलेम के छुटकारे के लिए यहोवा पर भरोसा करने के लिए अगुवाई की। उसकी सेवकाई के इन भागों में उसका एक मुख्य संदेश था- यहूदा को असीरियाई तबाही का सामना करने के लिए यहोवा पर भरोसा करना जरूरी है। निसंदेह, जब इस्राएलियों ने यहोवा पर भरोसा नहीं किया तो इस्राएल को एक और चेतावनी मिली: यहूदा बंधुआई में जाएगा। फिर भी अन्य अनेक भविष्यवक्ताओं के समान, यशायाह ने पुष्टि की कि यहूदा का पुनर्वास बंधुआई के बाद होगा।

अतः हम देख चुके हैं कि असीरियाई तबाही के समय में अनेक ऐसी घटनाएं थीं जिनका भविष्यवकताओं की सेवकाई पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा था। भविष्यवक्ता जानते थे कि यह परमेश्वर के लोगों के लिए बड़े दुःख और कठिनाई का समय होने वाला था। और वे दण्ड के वचनों के साथ आए, परन्तु इसके साथ-साथ उनके पास उत्साह के वचन भी थे कि एक उजज्वल दिन भी आने वाला है।

अब जब हमने यह देख लिया है कि असीरियाई तबाही के समय के दौरान पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने किस प्रकार कार्य किया, तो अब हमें बेबीलोनी तबाही के समय की ओर मुड़ना चाहिए।

बेबीलोनी तबाही

अब तक हम देख चुके हैं कि आरंभिक राजतंत्र ने पुराने नियम के सभी लिखने वाले भविष्यवक्ताओं की एक पृष्ठभूमि की रचना की थी। हम यह भी देख चुके हैं कि 734 से 701 ई.पू. की असीरियाई तबाही ने एक ऐतिहासिक संदर्भ की रचना की जिसमें योना, होशे, आमोस, मीका, नहूम और यशायाह ने सेवा की थी। अब हम भविष्यवाणीय सेवकाई के तीसरे मुख्य समय, अर्थात् बेबीलोनी तबाही की ओर आते हैं। तबाही का यह समय 605 ई.पू. से 539 ई.पू. तक का था।

कई रूपों में भविष्यवक्ता यशायाह असीरियाई तबाही और बेबीलोनी तबाही के बीच एक धूरी की रचना करता है। हम पहले ही देख चुके हैं कि यशायाह ने सन्हेरिब आक्रमण के दिनों में हिजकिय्याह के प्रति सेवा की। जब यह आक्रमण समाप्त हो गया, तो हिजकिय्याह ने आगामी आक्रमणों से बचने के लिए

बेबीलोनियों के साथ सन्धि करने का प्रयास किया। यशायाह के 39वें अध्याय में भविष्यवक्ता को यशायाह के इस कार्य के बारे में पता चलता है। इसलिए वह 39:5-7 में इन शब्दों को कहता है:

> सेनाओं के यहोवा का यह वचन सुन लेः ऐसे दिन आनेवाले हैं, जिस में जो कुछ तेरे भवन में है और जो कुछ आज के दिन तक तेरे पुरखाओं का रखा हुआ तेरे भण्डारों में हैं, वह सब बाबुल को उठ जाएगा; . . . जो पुत्र तेरे वंश में उत्पन्न हों, उन में से भी कितनों को वे बंधुआई में ले जाएंगे; और वह खोजे बनकर बाबुल के राजभवन में रहेंगे। (यशायाह 39:5-7)

एक बार फिर से हम हमारे विचार-विमर्श को दो भागों में बांटते हैं: पहला, बेबीलोनी तबाही की मुख्य घटनाएं कौनसी थीं, और दूसरा, इस समय के दौरान भविष्यवक्ताओं ने किस प्रकार सेवा की थी? आइए पहले हम उन मुख्य घटनाओं की ओर देखें जो बेबीलोनी तबाही के दौरान हुई थीं।

मुख्य घटनाएं

इस समय को समझने के लिए हमें तीन मुख्य घटनाओं को पहचानना जरूरी है: 605 ई.पू. का पहला आक्रमण, 597 ई.पू. का दूसरा आक्रमण, और 586 ई.पू. का तीसरा आक्रमण।

पहला आक्रमण

सबसे पहले 605 ई.पू. में पहला आक्रमण और यहूदी अगुवों का बेबीलोन निर्वासन हुआ। राजा यहोयाकीम अपने बेबीलोनी सुज़रेन, नबूकदनेस्सर के प्रति अविश्वासयोग्य हो गया, इसलिए नबूकदनेस्सर ने यहूदा पर आक्रमण किया और यरूशलेम से कई अगुवों को निकाल दिया। भविष्यवक्ता दानिय्येल और उसके मित्र, शद्रक, मेशक और अबेदनगो, उस समय के निर्वासित लोगों में से थे।

दूसरा आक्रमण

इस समय की दूसरी मुख्य घटना 597 ई.पू. में घटी। नबूकदनेस्सर ने यहूदा में लगातार हो रहे विद्रोह का जवाब एक और आक्रमण और निर्वासन के द्वारा दिया। इस समय उसने अधिकांश यहूदा को नाश कर दिया और वहां के बहुत से लोगों को बेबीलोन में बंधुआई में ले गया। इस निर्वासन में भविष्यवक्ता यहेजकेल को ले जाया गया था। इस दूसरे आक्रमण ने यहूदा को कई रूपों में हताहत किया, परन्तु उस राष्ट्र ने फिर भी अपने बुरे मार्गों से पश्चाताप नहीं किया।

तीसरा आक्रमण

बेबीलोनी समय की तीसरी मुख्य घटना 586 ई.पू. में घटी। नबूकदनेजर यहूदा में हो रहे विद्रोह से थक चुका था जिसके कारण उसने तीसरा और अंतिम आक्रमण और निर्वासन किया। इस समय बेबीलोनियों ने यरूशलेम और उसके पवित्र मंदिर को पूरी तरह से नाश कर दिया। यहूदा के अधिकतर लोगों को बेबीलोन ले जाया गया और उस भूमि को उजाड़ छोड़ दिया गया और यहूदा की एक बड़ी बंधुआई होने पर थी।

जब हम बेबीलोनी तबाही के दौरान हुई इन तीन मुख्य घटनाओं के बारे में सोचते हैं तो हमें याद रखना चाहिए कि यह परमेश्वर के लोगों के लिए संपूर्ण विनाश का समय था। दाऊद के पुत्र को बंधुआई में ले जाया गया था और यरूशलेम के मंदिर को नाश कर दिया गया था। परमेश्वर के लोगों के इतिहास में यह एक भयानक समय था।

अब जब हमने बेबीलोनी समय की मुख्य घटनाओं को देख लिया है, तो हमें उन तरीकों पर ध्यान देना है जिनमें पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने इस समय के दौरान सेवकाई की थी।

भविष्यवाणिय सेवकाइयां

बेबीलोनी तबाही पुराने नियम के कई भविष्यवक्ताओं के लिए एक ऐतिहासिक संदर्भ प्रदान करती है। इस समय में सात भविष्यवकताओं ने यहोवा के दूतों के रूप में सेवा की थी: यिर्मयाह, सपन्याह, योएल, ओबद्याह, हबक्कूक, यहेजकेल और दानिय्येल।

यिर्मयाह

बेबीलोनी समय का पहला भविष्यवकता यिर्मयाह था। यिर्मयाह ने तीनों आक्रमणों और निर्वासनों के दौरान यहूदा में परमेश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में सेवा की थी। जैसा कि हम यिर्मयाह 1:1-3 में पढ़ते हैं, यिर्मयाह ने लिखा:

> . . .योशिय्याह के दिनों में उसके राज्य के तेरहवें वर्ष में . . . यहोयाकीम के दिनों में . . . सिदकिय्याह के राज्य के ग्यारहवें वर्ष के अन्त तक जब . . . यरूशलेम के निवासी बंधुआई में न चले गए। (यिर्मयाह 1:1-3)

इन पदों से हम देखते हैं कि यिर्मयाह ने 626 ई.पू., बेबीलोन द्वारा असीरिया को हराए जाने से पूर्व ही, से सेवा करना आरंभ किया था, और 586 में अंतिम बेबीलोनी आक्रमण और निवार्सन के बाद भी यहोवा के दूत के रूप में सेवा करना जारी रखा था।

बेबीलोन के पहले आक्रमण से पहले ही यिर्मयाह ने आक्रमणों को रोकने के लिए सच्चा पश्चाताप करने की बुलाहट दी थी। जैसे-जैसे बेबीलोनी आक्रमण जारी रहे तो यिर्मयाह समझ गया कि यरूशलेम का विनाश निश्चित है। उसने लोगों को पश्चाताप करने और कठिनाई के वर्षों के लिए स्वयं को तैयार करने की बुलाहट दी। इसके बाद भी बेबीलोनी बंधुआई पर उसके ध्यान के बावजूद भी यिर्मयाह ने इस बात की भी पुष्टि की कि भविष्य में किसी एक दिन इस्राएल का पुनर्वास होगा। उदाहरण के लिए, उसकी पुस्तक के 30-31 अध्याय में यिर्मयाह ने यहूदा के लोगों को याद दिलाया कि परमेश्वर उन्हें अपनी भूमि पर लौटा लाएगा और एक नई वाचा के तहत उन्हें सुरक्षा में स्थापित करेगा।

सपन्याह

बेबीलोनी तबाही के समय का दूसरा भविष्यवक्ता सपन्याह था। सपन्याह 1:1 स्पष्ट रूप से बताता है कि कब उसने परमेश्वर के भविष्यवक्ता के रूप में सेवा की। उसने यहूदा के राजा योशिय्याह, जो आमोन का पुत्र था, के शासन में सेवा की थी। योशिय्याह ने लगभग 640 ई.पू. से 609 ई.पू. तक यहूदा पर शासन किया, और यह सपन्याह को यिर्मयाह की आरंभिक सेवकाई के समकालीन बनाती है। 2:13-15 में सपन्याह ने भविष्यवाणी की कि निनवे का पतन होगा, जैसा कि बेबीलोनियों के समक्ष उनका हुआ भी। सपन्याह ने भविष्यवाणी की कि प्रभु का दिन असीरिया और अन्य राष्ट्रों के विरुद्ध आ रहा है जिन्होंने परमेश्वर के लोगों को सताया था। उसने यहूदा समेत सारे क्षेत्र पर बेबीलोन का राज्य स्थापित होने की भविष्यवाणी की। इसके बाद भी सपन्याह ने यह घोषणा भी की कि ऐसा दिन आएगा जब इस्राएल और यहूदा का पुनर्वास होगा। जैसा कि वह 3:20 में कहता है :

> उसी समय मैं तुम्हें ले जाऊंगा, और उसी समय मैं तुम्हें इकट्ठा करूंगा; और जब मैं तुम्हारे साम्हने तुम्हारे बंधुओं को लौटा लाऊंगा, तब पृथ्वी की सारी जातियों के

> बीच में तुम्हारी कीत्र्ति और प्रशंसा फैला दूंगा, यहोवा का यही वचन है। (सपन्याह 3:20)

योएल

बेबीलोनी तबाही के समय आने वाला तीसरा भविष्यवक्ता योएल है। हम योएल की सेवकाई के प्रति पूरी तरह से निश्चित नहीं हो सकते क्योंकि उसकी पुस्तक उसकी सेवकाई के निश्चित समय के बारे में हमें नहीं बताती। कुछ व्याख्याकार योएल को पहले के समय का मानते हैं तो कुछ बाद का मानते हैं। फिर भी 1:13 और अन्य कई पदों से हम निश्चित हो सकते हैं कि मंदिर और याजकपन योएल के प्रचार के समय कार्यरत् थे। योएल ने भी 2:1 में घोषणा की कि सिय्योन का विनाश आने वाला है। अतः योएल ने यहूदियों के बेबीलोन में निर्वासन के दौरान सेवकाई की होगी। उसका संदेश बिल्कुल सीधा है- यहूदा राष्ट्र विदेशी सेनाओं के द्वारा नाश कर दिया जाएगा। और अध्याय 2 में योएल ने पश्चाताप की बुलाहट दी एवं यह आशा प्रदान की कि सच्चा पश्चाताप बेबीलोन से आने वाली तबाही को रोक या कम कर सकता है। फिर भी यह बताते हुए कि विनाश आ रहा है, योएल ने परमेश्वर की आशीषें मिलने के बारे में हार नहीं मानी। उसने अपने पाठकों को आश्वस्त किया कि जब बंधुआई समाप्त हो जाएगी तो परमेश्वर अपने लोगों को महान् वाचायी आशीष प्रदान करेगा। जैसा कि वह योएल 3:20-21 में कहता है:

> परन्तु यहूदा सर्वदा और यरूशलेम पीढ़ी पीढ़ी तब बना रहेगा। क्योंकि उनका खून, जो अब तक मैं ने पवित्र नहीं ठहराया था, उसे अब पवित्र ठहराऊंगा, क्योंकि यहोवा सिय्योन में वास किए रहता है। (योएल 3:20-21)

ओबद्याह

बेबीलोनी तबाही के दौरान चैथा भविष्यवक्ता ओबद्याह था। उसकी पुस्तक में भी कोई निश्चित समय नहीं दिया गया है, परन्तु यह बताती है कि ऐदोम राष्ट्र ने किस प्रकार यहूदियों के भयानक कष्टों का लाभ उठाया था। पूरी संभावना है कि ओबद्याह के मन में वे सब समस्याएं थीं जो यहूदियों पर 597 से 586 ई.पू. के दौरान बेबीलोन द्वारा यहूदा पर किए गए आक्रमणों और निर्वासनों के कारण आई थीं। ओबद्याह ने घोषणा की कि यहोवा एदोमियों की क्रूरता को नजरअंदाज नहीं करेगा। एदोम का नाश होगा। उसने यह भी घोषणा की कि एक दिन यहूदा के बंधुआई में गए हुए लोग वापिस आएंगे और एदोम पर अधिकार कर लेंगे। जैसे कि ओबद्याह अपनी पुस्तक के 15वें पद में कहता है :

> सारी अन्यजातियों पर यहोवा का दिन आना निकट है, जैसा तूने किया है, वैसा ही तुझ से भी किया जाएगा, तेरा व्यवहार लौटकर तेरे ही सिर पर पड़ेगा। (ओबद्याह 15)

ओबद्याह ने घोषणा की कि यहूदा की बंधुआई समाप्त होने के बाद परमेश्वर उन राष्ट्रों को दण्डित करेगा जिन्होंने उसके लोगों के साथ दुव्र्यवहार किया।

हबक्कूक

बेबीलोनी तबाही के दौरान सेवकाई करने वाला पांचवां भविष्यवक्ता हबक्कूक था। एक बार फिर से हमें उसकी सेवकाई के समय के बारे में सटीकता से पता नहीं है, फिर भी उसकी पुस्तक के लेख हमें कुछ अगुवाई जरूर देते हैं। हबक्कूक के पहले अध्याय में भविष्यवक्ता यहूदा में दुष्ट शासकों के विनाश के लिए प्रार्थना करता है। परमेश्वर का प्रत्युत्तर 1:6 में पाया जाता है। वहां यहोवा कहता है :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> मैं कसदियों को उभारने पर हूँ, वे क्रूर और उतावली करने वाली जाति है, जो पराए वासस्थानों के अधिकारी होने के लिए पृथ्वी भर में फैल गए हैं। (हबक्कूक 1:6)

इस अनुच्छेद के प्रकाश में ऐसा संभव है कि हबक्कूक ने 605 ई.पू. के बेबीलोन के आक्रमण और निर्वासन के आसपास सेवकाई की थी।

हबक्कूक ने पहले यहूदा के लोगों की बुराई पर विलाप किया और फिर बेबीलोन द्वारा किए जाने वाले अत्याचार पर विलाप किया, परन्तु उसकी पुस्तक के अंत में हबक्कूक ने यहोवा में अपने विश्वास की पुष्टि की फिर चाहे बेबीलोन को नाश करने में यहोवा कितना भी समय क्यों न ले। 3:17 में हम विश्वास के उन सुप्रसिद्ध वचनों को पढ़ते हैं :

> चाहे अंजीर के वृक्षें में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें, जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया जाए और खेतों में अन्न न उपजे, भेड़शालाओं में भेड़-बकरियां न रहें, और न थानों में गाय बैल हों, तौभी मैं यहोवा के कारण आनन्दित और मगन रहूंगा, और अपने उद्धारकत्र्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूंगा। (हबक्कूक 3:17-18)

यहेजकेल

बेबीलोनी समय के दौरान सेवा करने वाला छठा भविष्यवक्ता यहेजकेल था। यहेजकेल 1:2 हमें बताता है कि 597 ई.पू. में भविष्यवक्ता को बेबीलोन ले जाया गया था। जैसे कि उसकी शेष पुस्तक स्पष्ट करती है, यहेजकेल ने बंधुआई में गए लोगों के बीच बेबीलोन में सेवा की। यहेजकेल ने 586 ई.पू. में यरूशेलम के बड़े विनाश के समय के बीच में भी सेवा की। अतः यहेजकेल ने 597 ई.पू. से 586 ई.पू. के यरूशलेम के विनाश के समय तक सेवा की। यहेजकेल ने अपनी अधिकांश आरंभिक सेवा यह घोषणा करते हुए की कि बेबीलोनी यरूशलेम और उसके मंदिर का नाश करने वाले हैं। इससे बढ़कर, यहेजकेल की पुस्तक का बड़ा भाग इस बात पर केन्द्रित है कि लोग पुनः अपनी भूमि पर कैसे लौटेंगे और जब वे लौटेंगे तो उन्हें मंदिर का पुनर्निर्माण कैसे करना है। यह बताने के बाद कि किस प्रकार नगर और मंदिर कल्पना से भी बड़ा होगा, वह 48:35 में अपनी पुस्तक का इस प्रकार से अंत करता है :

> और उस दिन से आगे को नगर का नाम “यहोवा शाम्मा” रहेगा। (यहेजकेल 48:35)

दानिय्येल

बेबीलोनी तबाही के दौरान सेवा करने वाला सातवां भविष्यवक्ता दानिय्येल था। दानिय्येल को 605 ई.पू. में पहले निर्वासन के दौरान बेबीलोन ले जाया गया था। उसकी पुस्तक में इन घटनाओं के पद इसे स्पष्ट करते हैं कि दानिय्येल की सेवकाई कम से कम 605 ई.पू. से 539 ई.पू. तक के समय में थी। दानिय्येल ने स्वप्नों की व्याख्या की और स्वयं भी दर्शन देखे जिन्होंने स्पष्ट किया कि यहूदा की बंधुआई एक लम्बे समय की होने जा रही थी। उसने अनुभव किया कि परमेश्वर के लोगों ने बंधुआई में भी अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया है, अतः जैसा कि वह 9:13 में कहता है :

> जैसे मूसा की व्यवस्था में लिखा है, वैसे ही यह सारी विपत्ति हम पर आ पड़ी है, तौभी हम अपने परमेश्वर यहोवा को मनाने के लिए न तो अपने अधर्म के कामों से फिरे, और न तेरी सत्य बातों पर ध्यान दिया। (दानिय्येल 9:13)

इसके परिणामस्वरूप दानिय्येल ने जान लिया कि परमेश्वर के लोगों की बंधुआई चार राज्यों तक चलती रहेगी: वे हैं बेबीलोनी, मादी और फारसी, यूनानी और चैथा बेनाम राष्ट्र जिसके बारे में हम आज जानते हैं कि वह रोमी साम्राज्य है। दानिय्येल ने बंधुआई में गए लोगों को पश्चाताप और विश्वास करने के लिए उत्साहित किया और उन्हें चेतावनी दी कि लगातार विद्रोह लोगों को अपनी भूमि से दूर ही रखेगा।

बेबीलोनी तबाही के बारे में जितना कहें वह कम ही होगा। यह ऐसा समय था जब परमेश्वर के लोगों ने एक बड़ी पराजय का सामना किया; परमेश्वर के लोग यहूदा की भूमि से बंधुआई में ले जाए गए; दाऊद के पुत्र को उसके सिंहासन से उतार दिया गया; यरूशलेम नगर और परमेश्वर के मंदिर को नाश कर दिया गया। और इस समय के दौरान भविष्यवक्ताओं ने चेतावनी और दण्ड के वचन कहे, परन्तु इसके साथ-साथ उन्होंने यह आशा भी प्रदान की कि एक दिन परमेश्वर अपने लोगों, यरूशलेम, और यहूदा को पुनरुथापित करेगा।

भविष्यवक्ताओं के ऐतिहासिक विश्लेषण के इस अध्याय में अब तक हम तीन समयों की मुख्य घटनाओं और भविष्यवाणिय सेवकाइयों को देख चुके हैं। अब हम पुराने नियम की भविष्यवाणी के अंतिम समय की ओर आते हैं, अर्थात् पुनर्वास का समय।

पुनर्वास का समय

जैसा कि हम देख चुके हैं, आरंभिक राजतंत्र ने बाइबल के लिखने वाले भविष्यवक्ताओं के लिए एक पृष्ठभूमि प्रदान की है। असीरियाई तबाही के समय में कई भविष्यवक्ताओं ने सेवा की, और बेबीलोनी तबाही के दिनों में तो और अधिक भविष्यवक्ताओं ने सेवा की। अब हमें उन भविष्यवक्ताओं को देखना है जिन्होंने परमेश्वर के लोगों के बीच तब सेवा की थी जब कुछ इस्राएली बेबीलोन की बंधुआई से यहूदा में लौट आए थे। पुनर्वास का यह समय 539 ई.पू. से 400 ई.पू. तक का था। इस समय को हम पहले तो उस समय की घटनाओं और फिर भविष्यवाणीय सेवकाइयों पर ध्यान देने के द्वारा जांचेगें। आइए पहले हम पुनर्वास के समय की मुख्य घटनाओं पर ध्यान दें।

मुख्य घटनाएं

पहली घटना जिसका उल्लेख हमें करना चाहिए वह है, इस्राएलियों का अपनी भूमि पर लौट आना।

इस्राएलियों का अपनी भूमि पर लौट आना

539 और 538 ई.पू. में परमेश्वर ने बंधुआई में गए अपने लोगों के लिए एक अद्भुत कार्य किया। यशायाह में की गई भविष्यवाणियों की पूर्णता में फारसी सम्राट कुस्रू ने बेबीलोनी साम्राज्य पर अधिकार कर लिया और इस्राएलियों को उनकी भूमि पर लौट जाने एवं यहोवा के मंदिर का पुनर्निर्माण करने के लिए उत्साहित किया। बंधुआई से लोगों का यह आरंभिक पुनर्वास शेशबस्सर की अगुवाई में हुआ, जिसे कई लोग जरूब्बाबेल भी मानते हैं और जो दाऊद के सिंहासन का आधिकारिक उत्तराधिकारी था। परन्तु जो लोग बंधुआई से लौटे थे, वे संख्या में बहुत कम थे और वे यहोवा की ईच्छा को पूरा करने के लिए मजबूती से समर्पित नहीं थे।

मंदिर का पुनर्निर्माण किया जाना

अब यह बात हमें पुनर्वास के समय की दूसरी मुख्य घटना की ओर लेकर आती है, अर्थात् 520 से 515 ई.पू. के दौरान मंदिर का पुनर्निर्माण। वे इस्राएली जो सबसे पहले पहुंचे थे उन्होंने मंदिर के निर्माण को नजरअंदाज कर दिया था। उन्होंने कार्य को आरंभ तो किया परन्तु वे अपनी जरूरतों में इतना खो गए कि निर्माण का कार्य रोक दिया। क्योंकि लोग मंदिर के पुनर्निर्माण में असफल हो रहे थे इसलिए हाग्गै और जकर्याह परमेश्वर के मंदिर का पुनर्निर्माण करने के लिए लोगों को उत्साहित करने हेतू 520 ई.पू. के लगभग यरूशलेम की गलियों में उतर आए। पहले-पहले तो बहुत सकारात्मकता और बड़ी आशा थी, परन्तु यह सकारात्मकता ज्यादा दिन नहीं चली।

व्यापक धर्मपरित्याग

पुनर्वास के समय की तीसरी बड़ी घटना व्यापक रूप से धार्मिकता का परित्याग थी। धार्मिकता का यह परित्याग मंदिर की आरंभिक पुनरुथापना के बाद बढ़ा, विशेषकर एज्रा और नहेम्याह की सेवकाइयों के दौरान। विद्वान इस समय की तिथि के बारे में अलग-अलग विचार रखते हैं, इसलिए हमें इसकी संभावना को 450 से 400 ई.पू. तक के बीच में रखना चाहिए। एक ही पीढ़ी के भीतर जरूब्बाबेल द्वारा मंदिर का पुनर्निर्माण कर लेने के बाद परमेश्वर के लोगों ने विदेशी स्त्रियों से विवाह रचाना शुरू कर दिया था और इसके फलस्वरूप इस्राएल का धर्म दूसरे लोगों के धर्मों के साथ मिल गया। पुनर्वास के कार्य में रूकावट आ गई। अब एज्रा और नहेम्याह के समय में कुछ सुधार हुआ और उन्होंने कुछ समय के लिए कार्य किया, परन्तु सुधार के वे कार्य भी लंबे समय तक नहीं चले। पुनर्वास का यह समय धर्म के परित्याग का समय बन गया।

अब हम पुनर्वास के समय के हमारे दूसरे विषय की ओर मुड़ते हैं। इन घटनाओं ने उन भविष्यवक्ताओं को किस प्रकार प्रभावित किया जिन्होंने इस समय के दौरान सेवकाई की?

भविष्यवाणिय सेवकाइयां

तीन जानेमाने भविष्यवक्ता हाग्गै, जकर्याह और मलाकी थे। आइए पहले हम हाग्गै की सेवकाई को देखें।

हाग्गै

हाग्गै की पुस्तक बहुत स्पष्ट रूप में बताती है कि यह भविष्यवक्ता उन लोगों में से था जो अपनी भूमि पर लौट के आए थे। फलस्वरूप उसकी सेवकाई यरूशलेम में हुई थी। इससे बढ़कर, हम सटीकता से जान पाते हैं कि हाग्गै ने कब सेवा थी। हाग्गै 1:1 में हम पाते हैं कि परमेश्वर यहूदा के राज्यपाल जरूब्बाबेल से छठे महिने के पहले दिन हाग्गै के द्वारा बात की थी। हाग्गै की पुस्तक के इस और अन्य अनुच्छेदों से हम जान लेते हैं कि हाग्गै की सभी भविष्यवाणियां 520 ई.पू. में चार महिनों के समय के दौरान दी गई थीं।

अब हाग्गै का मूल संदेश क्या था? हाग्गै मंदिर का पुनर्निर्माण करने के लिए यहूदा के भटके हुए निवासियों को प्रेरित करने के लिए प्रतिबद्ध था। हाग्गै ने तो यह भविष्यवाणी भी की थी कि बड़ी विजय और आशीषें जरूब्बाबेल को मिलेंगी यदि वह और लोग अपने पापों का पश्चाताप कर लें। जैसा कि वह 2:21 में कहता है :

> यहूदा के अधिपति जरूब्बाबेल से यों कह, मैं आकाश और पृथ्वी दोनों को कम्पाऊंगा। (हाग्गै 2:20-21)

हाग्गै ने लोगों को परमेश्वर की बड़ी आशीषों का वादा किया यदि वह राष्ट्र यहोवा की ओर लौट आए और मंदिर का पुनर्निर्माण करे।

जकर्याह

पुनर्वास के समय का दूसरा भविष्यवक्ता जकर्याह था। जकर्याह की भविष्यवाणी के लेखनों से हम जान पाते हैं कि उसने यरूशलेम में हाग्गै के साथ-साथ सेवा की थी। 1:1 दर्शाता है कि हाग्गै ने दारा के दूसरे वर्ष के आठवें महीने में सेवा करना आरंभ किया था, दूसरे शब्दों में 520 ई.पू. में। और जकर्याह के अध्याय 9-14 के लेखनों से अनेक व्याख्याकार मानते हैं कि यह स्पष्ट होने के बाद जकर्याह की सेवा जारी रही कि मंदिर का पुनर्निर्माण दैवीय आशीषों को लाने के लिए पर्याप्त नहीं है। जकर्याह की पुस्तक के पहले आठ अध्यायों में सारगर्भित उसकी आरंभिक सेवकाई में भविष्यवक्ता का संदेश बिल्कुल सीधा था: बड़ी आशीषें आएंगी यदि लोग मंदिर का पुनर्निर्माण करेंगे। इससे बढ़कर अध्याय 9-14 में जकर्याह ने भविष्यवाणी की कि संपूर्ण पुनर्वास भयंकर, भावी, दैवीय हस्तक्षेप से ही होगा। भविष्यवक्ता ने भविष्य की कई घटनाओं के दर्शन देखे जब परमेश्वर हस्तक्षेप करेगा और अपने लोगों के लिए विजय और धार्मिकता लेकर आएगा। जैसा कि उसने 14:20 में कहा :

> उस समय घोड़ों की घंटियों पर भी यह लिखा रहेगा, यहोवा के लिए पवित्र। और यहोवा के भवन की हंडिया, उन कटोरों के तुल्य पवित्र ठहरेंगी जो वेदी के सामने रहते हैं। (जकर्याह 14:20)

मलाकी

अब पुराने नियम का अंतिम भविष्यवक्ता मलाकी था। मंदिर और लेवियों पर उसके द्वारा ध्यान देने से यह स्पष्ट है कि मलाकी ने भी यरूशलेम के क्षेत्र में सेवा की थी। उसका संदेश लगभग 450 और 400 ई.पू. के बीच नहेम्याह के सुधारों के दौरान या उनके बाद के समय में उपयुक्त बैठता है। मंदिर की सेवाएं इतनी भ्रष्ट हो चुकी थीं, और लोग यहोवा से इतनी दूर जा चुके थे कि मलाकी को यह घोषणा करनी पड़ी कि अभी भी एक बड़ा दण्ड परमेश्वर के लोगों के लिए आ रहा है। जैसा कि हम मलाकी 3:5 में पढ़ते हैं:

> (यहोवा) न्याय करने को तुम्हारे निकट आएगा। (मलाकी 3:5)

फिर भी मलाकी यह भी जानता था कि भविष्य में परमेश्वर का दण्ड इस्राएल में धर्मी लोगों के अंतिम पुनर्वास की ओर भी अगुवाई करेगा। 4:2 में मलाकी उन लोगों के लिए आशा प्रदान करता है जो पश्चाताप करते हैं और प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहने को प्रमाणित करते हैं :

> परन्तु तुम्हारे लिए जो मेरे नाम का भय मानते हो, धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे, और तुम निकलकर पाले हुए बछड़ों की नाई कूदोगे और फांदोगे। (मलाकी 4:2)

धार्मिकता के परित्याग के समय में भी मलाकी ने इस्राएल को आश्वस्त किया कि दण्ड के बाद एक बड़ी आशीष का समय आएगा।

पुनर्वास के समय के भविष्यवक्ताओं को बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ा। बंधुआई से लौटे परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के प्रति विद्रोह करना जारी रखा, और इसके फलस्वरूप भविष्यवक्ताओं ने अंत में यही कहा कि बड़े पुनर्वास की आशीषें दूर कहीं भविष्य में आएंगी। अब मसीही होने के नाते हम जानते हैं कि दूर का यह भविष्य कब आया - यह तब हुआ जब यीशु इस धरती पर आया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के ऐतिहासिक विश्लेषण को देखा है। यद्यपि इतिहास काफी जटिल है, फिर भी चार मुख्य समयों के रूप में भविष्यवाणिय इतिहास की घटनाओं को सारगर्भित करना सहायक होगा: पहला, आरंभिक राजतंत्र; दूसरा असीरियाई तबाही; तीसरा, बेबीलोनी तबाही; और चैथा, बंधुआई के बाद का समय, अर्थात् वह समय जब आरंभिक रूप से बहुत आशाएं थीं परन्तु उन आशाओं ने एक और दण्ड का मार्ग प्रशस्त कर दिया जिसके बाद परमेश्वर की ओर से दूर भविष्य में आशीष आने वाली थी।

जब हम पुराने नियम की भविष्यवाणी की व्याख्या करना सीखते हैं तो उनके शब्दों को उनकी परिस्थितियों के साथ जोड़कर देखना आवश्यक है। जब हम भविष्यवक्ताओं के शब्दों को उनकी ऐतिहासिक परिस्थितियों के साथ जोड़ते हैं तो हम समझ पाएंगे कि उन दिनों के लोगों के लिए उनके वचनों का क्या अर्थ था, और इसके साथ-साथ हम यह भी समझ पाएंगे कि आज हमारे लिए उनके वचनों का क्या अर्थ है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।